—— x —— x ——

श्री

Economics (Hons)

Part - I, Paper - II

Topic - Reserve Bank of India

Q. भारतीय रिजर्व बैंक के कार्य

भारतीय रिजर्व बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 के प्रावधानों के अनुसार 1 अप्रैल 1935 को हुयी। प्रारंभ में इसका स्वामित्व निजी क्षेत्र में था, जिसका राष्ट्रीयकरण 1949 में किया गया और यह पूर्णतः भारत सरकार के अधीन है। यह देश का केन्द्रीय बैंक है और इसका प्रधान कार्यालय बम्बई में अवस्थित है।

कार्य :- Functions of Reserve Bank of India

(i) नोट निर्गमन का एकाधिकार :- भारत में नोट छापने का अधिकार केवल रिजर्व बैंक के पास है। इसके पास एक रुपये के नोट को छोड़कर (एक रुपये का नोट वित्त-मंत्रालय के द्वारा जारी किया जाता है) सभी प्रकार के नोट छापने का अधिकार है। नोट जारी करने के लिये रिजर्व बैंक न्यूनतम रिजर्व प्रणाली का सहारा लेता है। इस प्रणाली के अनुसार रिजर्व बैंक को विदेशी मुद्रा-भंडार के रूप में 200 करोड़ रुपये रिजर्व के रूप में सुरक्षित रखना होता है जिसमें कम से कम 115 करोड़ रुपये सोने के रूप में तथा शेष राशि विदेशी मुद्रा के रूप में होती है। इसके बाद यह भारत सरकार के परामर्श एवं अनुमति से जितना नोट छापना है, इसका निर्णय कर नोटों की छपाई का कार्य करता है।

(ii) भारत सरकार का बैंक :- भारतीय रिजर्व बैंक का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य भारत सरकार और राज्यों के बैंक, एजेंट एवं सलाहकार के रूप में काम करना है। यह राज्य एवं केन्द्र सरकार के सभी बैंकिंग कार्यों का निष्पादन करने के साथ ही साथ सरकार को आर्थिक एवं मौद्रिक नीति से संबंधित मामलों में परामर्श भी देने का कार्य करता है। यह सरकार के सार्वजनिक-ऋण का प्रबंधनकर्त्ता भी है।

(iii) बैंकों का बैंक :- रिजर्व बैंक देश के सभी बैंकों का बैंक है। यह देश के अन्तर्गत सभी वाणिज्यिक बैंकों को पैसा उधार देता है

Scanned with CamScanner

यह सभी वाणिज्यिक बैंकों के लिये उसी प्रकार का कार्य करता है जिस प्रकार वाणिज्यिक बैंक अपने ग्राहकों के लिये कार्य करते हैं।

(iv) साख का नियंत्रण :- देश में साख-नियंत्रण का महत्वपूर्ण कार्य रिजर्व-बैंक के द्वारा ही किया जाता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वह देश में ऋण के नियंत्रण एवं विनियमन के लिये मात्रात्मक एवं गुणात्मक तकनीक का उपयोग करता है। जब देश की अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहता है और मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होने पर वह कड़ी मौद्रिक-नीति के माध्यम से बाजार में मुद्रा की आपूर्ति में कमी लाने का उपाय करता है और इसके विपरीत जब बाजार में मुद्रा की कमी हो जाती है तो वह बाजार में मुद्रा की आपूर्ति बढ़ाने का कार्य करता है। साख-नियंत्रण के लिये रिजर्व बैंक गुणात्मक विधियों में — बैंक दर, नगद आरक्षित अनुपात, वैधानिक तरलता अनुपात एवं खुले बाजार की क्रियाओं का सहारा लेता है जबकि मात्रात्मक विधियों के अन्तर्गत वह — मार्जिन मनी में अंतर, क्रेडिट राशनिंग, नैतिक दबाव आदि माध्यम अपनाता है।

(v) विदेशी-मुद्रा भंडार का संरक्षक :- रिजर्व बैंक देश में विदेशी मुद्रा-भंडार का संरक्षक का कार्य करता है। विदेशी विनिमय दर को स्थिर रखने के उद्देश्य से रिजर्व बैंक विदेशी मुद्रा के क्रय एवं विक्रय का महत्वपूर्ण कार्य अपने माध्यम से संचालित एवं नियंत्रित करने का कार्य करता है तथा विदेशी मुद्रा की सुरक्षा की जिम्मेवारी इसी की होती है। विदेशी विनिमय बाजार में जब विदेशी-मुद्रा की आपूर्ति कम हो जाती है भारतीय रिजर्व बैंक बाजार में विदेशी-मुद्रा बेचता है जिससे इसकी मात्रा में वृद्धि होती है और इसके विपरीत जब अर्थव्यवस्था में विदेशी-मुद्रा अधिक हो जाती है तो रिजर्व बैंक बाजार से विदेशी-मुद्रा का क्रय कर बाजार में इसकी मात्रा को कम करने का प्रयास करती है।

(vi) अन्य कार्य :- उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त रिजर्व बैंक के द्वारा देश के अन्तर्गत अन्य वित्तीय कार्यों को भी किया जाता है। देश में कृषि-कार्यों के लिये ऋण का अनुमोदन एवं क्रियान्वयन नाबार्ड के माध्यम से संचालित कराने का कार्य करता है। साथ ही साथ सरकारी प्रतिभूति और व्यापारिक बिलों की खरीद-बिक्री, सरकारी खरीद के लिये ऋण की व्यवस्था का दायित्व और देश के लिये मूल्यवान वस्तुओं की खरीदने की व्यवस्था का दायित्व रिजर्व बैंक ही निभाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष में भारत के प्रतिनिधी के रूप में कार्य करता है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने 6 july 2005 को वित्तीय बाजारों पर नियंत्रण एवं निगरानी हेतु एक नये विभाग का गठन किया गया है जिसका नाम "वित्तीय बाजार विभाग" रखा गया है। यह नवगठित विभाग भविष्य में ऋण-प्रबंधन और मौद्रिक [illegible] संचालन की गतिविधियों को अलग करेगा। यह विभाग मुद्रा-बाजार के उपकरणों के विकास और निगरानी का

Scanned with CamScanner

भी करेगा।

इस प्रकार कहा जा सकता है रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया देश की मौद्रिक-नीति के निर्माण के साथ ही साथ देश के अन्तर्गत सम्पूर्ण वित्तीय-कार्यों का ~~संच~~ संचालन, निरीक्षण एवं नियंत्रण का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

प्रो० देवेन्द्र प्रसाद सिंह
अर्थशास्त्र-विभाग
सीतारा-कॉलेज, बिहार शरीफ

Scanned with CamScanner